

## भारत का अद्वितीय रोज़गार संकट

### प्रलिस के लिये:

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, आवधिक श्रम सर्वेक्षण, विभिन्न क्षेत्रों में रोज़गार, बेरोज़गारी के प्रकार

### मेन्स के लिये:

अर्थव्यवस्था में कृषिक्षेत्र का महत्त्व, भारत में रोज़गार और बेरोज़गारी, बेरोज़गारी के प्रकार

## चर्चा में क्यों?

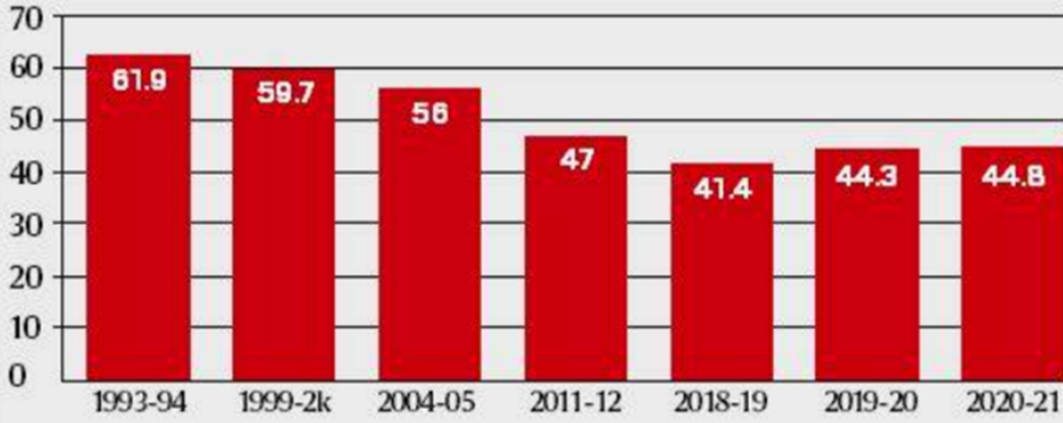
हाल के एक अध्ययन के अनुसार, वर्तमान में **कृषि में कम लोग कार्यरत हैं**, इसके वाबजूद परिवर्तन कमज़ोर रहा है।

- कृषिकार्य को छोड़ने वाले लोग **कारखानों की तुलना में निर्माण स्थलों** और **असंगठित अर्थव्यवस्था** में अधिक संख्या में काम कर रहे हैं।

## कृषिक्षेत्र में रोज़गार:

- वर्ष 1993-94 में कृषिक्षेत्र की नयोजति श्रम शक्त का लगभग 62% थी।
- कृषि में श्रम प्रतिलिप्त (**राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण** के आँकड़ों के आधार पर) वर्ष 2004-05 तक लगभग 6% अंक और अगले सात वर्षों में 9% अंक गरि गया।
  - गरिवट की प्रवृत्तिबाद के सात वर्षों में भी धीमी गतिसे जारी रही।
- वर्ष 1993-94 और वर्ष 2018-19 के बीच भारत के कार्यबल में कृषि की हसिसेदारी 61.9% से घटकर 41.4% हो गई।
  - यह अनुमान है कि वर्ष 2018 में प्रतिलिप्त **सकल घरेलू उत्पाद** स्तर के अनुसार, भारत के कृषिक्षेत्र में कुल कार्यबल का 33-34% कार्यरत होना चाहिये।
    - अर्थात् यह 41.4% औसत कार्यबल से पर्याप्त वचिलन को नहीं दर्शाता है।

## % SHARE OF WORKFORCE IN AGRICULTURE



## SECTORAL EMPLOYMENT SHARES (IN PER CENT)

	2011-12	2018-19	2019-20	2020-21
Agriculture	47.0	41.4	44.3	44.8
Manufacturing	12.5	12.1	11.3	11.0
Mining	0.6	0.4	0.3	0.3
Construction	10.7	12.2	11.7	12.4
Services	28.6	33.2	31.8	30.9
Utilities	0.6	0.6	0.6	0.6
<b>Total</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>	<b>100.00</b>
Organised sector	24.1	23.3	22.9	23.2

## भारत में रोज़गार प्रवृत्ति:

### ■ कृषि:

#### ○ प्रवृत्तिका उत्क्रमण:

- पछिले दो वर्षों में प्रवृत्ति में बदलाव आया है, जिससे वर्ष 2020-21 में कृषि में कार्यरत लोगों की हस्सिसेदारी बढ़कर 44-45% हो गई है।
  - यह मुख्य रूप से कोवडि-प्रेरति आर्थिक व्यवधानों से संबंधित है।

#### ○ संरचनात्मक परिवर्तन:

- यहाँ तक कि पछिले तीन दशकों या उससे अधिक समय में भारत में कृषि से श्रम का जमेलायन देखा गया वह उस योग्य नहीं है जिससे अर्थशास्त्री "संरचनात्मक परिवर्तन" कहते हैं।
  - संरचनात्मक परिवर्तन में कृषि से श्रम का स्थानांतरण उन क्षेत्रों, विशेष रूप से वनिरिमाण और आधुनिक सेवाओं जहाँ उत्पादकता, मूल्यवर्द्धन तथा औसत आय अधिक है, में होना शामिल है।
  - हालाँकि कुल रोज़गार में कृषि के साथ ही वनिरिमाण (और खनन) का भी हस्सिसा कम हुआ है।
  - कृषि से अधिशेष श्रम को बड़े पैमाने पर नरिमाण और सेवाओं में समाहित किया जा रहा है।
- भारत में संरचनात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया कमज़ोर और दोषपूर्ण रही है।
  - कोवडि के कारण अस्थायी रूप से ठप होने के बावजूद कृषि से अलग क्षेत्रों में मजदूरों की आवाजाही जारी है।
  - लेकिन वह अधिशेष श्रम उच्च मूल्यवर्द्धति गैर-कृषि गतिविधियों विशेष रूप से वनिरिमाण और आधुनिक सेवाओं की ओर नहीं बढ़ रहा है।
  - श्रम हस्तांतरण कम उत्पादकता वाली अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के भीतर हो रहा है।

### ■ सेवा क्षेत्र:

- सेवा क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी, व्यवसाय प्रक्रिया, आउटसोर्सिंग, दूरसंचार, वित्त, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और लोक प्रशासन जैसे अपेक्षाकृत अच्छी तरह से भुगतान करने वाले उद्योग शामिल हैं।
  - इस मामले में अधिकांश नौकरियाँ छोटी खुदरा बिक्री, छोटे भोजनालयों, घरेलू मदद, स्वच्छता, सुरक्षा स्टाफ, परिवहन और इसी तरह की अन्य अनौपचारिक आर्थिक गतिविधियों से संबंधित हैं।

- यह **संगठित उद्यमों** में रोज़गार के कम हिससे से भी स्पष्ट है, जनिहें 10 या अधिक शर्मकियों को नयुक्त करने वाले के रूप में परभाषति कयिा गया है ।

## सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में रोज़गार के बढ़ते अवसर:

- वर्ष 2020-22 के बीच भारत की शीर्ष पाँच आईटी कंपनयियों (टाटा कंसलटेंसी सर्वसिज़, इंफोससि, वपिरो, एचसीएल टेक्नोलॉजीज़ और टेक महदिरा) में संयुक्त कर्मचारियों की संख्या **55 लाख से बढ़कर 15.69 लाख हो गई है** ।
  - महामारी के बाद की अवधि में यह 4.14 लाख या लगभग 36% की वृद्धि है, जब कृषि को छोड़कर अधिकांश अन्य क्षेत्र नौकरियों और वेतन में कमी कर रहे थे ।
  - इन पाँच कंपनयियों में संयुक्त रोज़गार की संख्या, **भारतीय रेलवे** और तीन रक्षा सेवाओं के संयुक्त रोज़गार की तुलना में अधिक है ।
- आईटी क्षेत्र में हाल की अधिकांश सफलता नरियात के परिणामस्वरूप है ।
  - **भारत का सॉफ्टवेयर सेवाओं में शुद्ध नरियात** वर्ष 2019-20 में 84.64 बलियन डॉलर से बढ़कर वर्ष 2021-22 में 109.54 बलियन डॉलर हो गया है ।

## बेरोज़गारी पर अंकुश लगाने हेतु संभावति उपाय:

- कृषि में संलग्न शर्मकियों को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना:
  - सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र में **संलग्न कार्यबल के कौशल को बढ़ाने वाली योजनाओं** को प्राथमकिता दी जानी चाहयि ।
    - कृषि क्षेत्र में कौशल तथा ज्ञान को बढ़ावा देने से यह **दोहरा लाभ प्रदान करेगा** और साथ ही शर्मकियों को रोज़गार के अन्य बेहतर क्षेत्रों की तलाश करने में मदद करेगा ।
- शर्म-गहन उद्योगों को बढ़ावा देना:
  - भारत में कई शर्म प्रधान वनिरिमाण क्षेत्र हैं जैसे- **खाद्य प्रसंस्करण**, चमड़ा और जूते, लकड़ी के उत्पाद एवं फरनीचर, परिधान, टेक्सटाइल व वस्त्र आदि ।
    - रोज़गार सृजति करने के लयि प्रत्येक उद्योग को **वशिष पैकेज** की आवश्यकता होती है ।
- उद्योगों का विकेंद्रीकरण:
  - प्रत्येक क्षेत्र में लोगों को रोज़गार प्रदान करने के लयि औद्योगिक गतिविधियों का विकेंद्रीकरण कयिा जाना आवश्यक है ।
  - **ग्रामीण क्षेत्रों के विकास** से शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण लोगों के प्रवास को कम करने में मदद मलैगी जसिसे शहरी क्षेत्र में रोज़गार पर दबाव कम होगा ।
- सरकार की पहल:
  - **"आजीविका और उद्यम के लयि सीमांत वयक्तयिों हेतु समर्थन" (समाइल)**
  - **पीएम दक्ष योजना**
  - **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधनियिम (मनरेगा)**
  - **प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना**
  - **सटारटअप इंडिया योजना**

## बेरोज़गारी के प्रकार:

- **प्रचछन्न बेरोज़गारी:**
  - यह एक ऐसी स्थति है जसिमें वास्तव में **आवश्यकता से अधिक लोगों को रोज़गार** दिया जाता है ।
  - यह मुख्य रूप से भारत के **कृषि और असंगठित क्षेत्रों** में पाई जाती है ।
- **मौसमी बेरोज़गारी:**
  - यह बेरोज़गारी **वर्ष के कुछ नशिचति मौसमों** के दौरान देखी जाती है ।
  - भारत में **खेतहिर मज़दूरों** के पास वर्ष भर काफी कम काम होता है ।
- **संरचनात्मक बेरोज़गारी:**
  - यह बाज़ार में उपलब्ध **नौकरयिों और शर्मकियों के कौशल के बीच असंतुलन** होने से उत्पन्न बेरोज़गारी की एक श्रेणी है ।
- **चक्रीय बेरोज़गारी:**
  - यह व्यापार चक्र का परिणाम है, जहाँ **मंदी** के दौरान बेरोज़गारी बढ़ती है और **आर्थिक विकास** के साथ घटती है ।
- **तकनीकी बेरोज़गारी:**
  - यह प्रौद्योगिकी में बदलाव के कारण रोज़गार में आई कमी है ।
- **घर्षण बेरोज़गारी:**
  - घर्षण बेरोज़गारी का आशय ऐसी स्थतिसे है, जब कोई वयक्त **नई नौकरी की तलाश** कर रहा होता है या नौकरयिों बदल रहा होता है, यह नौकरयिों के बीच समय अंतराल को संदर्भति करती है ।
- **सुभेद्य रोज़गार:**
  - इसका मतलब है कि लोग **बनिा उचति नौकरी अनुबंध के अनौपचारिक रूप** से काम कर रहे हैं और इस प्रकार इनके लयि कोई कानूनी सुरक्षा नहीं है ।
  - इन वयक्तयिों को **'बेरोज़गार'** माना जाता है क्योकि उनके कार्य का रिकॉर्ड कभी भी नहीं बनाया जाता है ।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्ष के प्रश्न (PYQs):

प्रचछन्न बेरोज़गारी का आमतौर पर अर्थ होता है:

- (a) बड़ी संख्या में लोग बेरोज़गार रहते हैं
- (b) वैकल्पिक रोज़गार उपलब्ध नहीं है
- (c) श्रम की सीमांत उत्पादकता शून्य है
- (d) श्रमिकों की उत्पादकता कम है

उत्तर: C

व्याख्या:

- एक अर्थव्यवस्था तब प्रचछन्न बेरोज़गारी को प्रदर्शति करती है जब उत्पादकता कम होती है और बहुत से श्रमिक कार्य कर रहे हों।
- एक अर्थव्यवस्था उस उत्पादन को प्रदर्शति करती है जो श्रम की एक इकाई के अतिरिक्त प्राप्त होता है। प्रचछन्न बेरोज़गारी जब उत्पादकता कम होती है और कम कार्य के लिये बहुत से श्रमिक नयोजति होंते हैं।
- सीमांत उत्पादकता योजक को संदर्भति करती है।
- चूँकि प्रचछन्न बेरोज़गारी में आवश्यकता से अधिक श्रम पहले से ही काम में लगा होता है, अतः श्रम की सीमांत उत्पादकता शून्य होती है।
- अतः विकल्प (c) सही है।

प्र. क्या कषेत्रीय-संसाधन आधारति वनिरिमाण की रणनीति भारत में रोज़गार को बढ़ावा देने में मदद कर सकती है? (मुख्य परीक्षा, 2019)

प्रश्न. आमतौर पर देश कृषि से उद्योग में और फिर बाद में सेवाओं में स्थानांतरति हो जाते हैं, लेकिन भारत कृषि से सीधे सेवाओं में स्थानांतरति हो गया। देश में उद्योग की तुलना में सेवाओं की भारी वृद्धिके क्या कारण हैं? क्या मज़बूत औद्योगिकि आधार के बनिा भारत एक विकसति देश बन सकता है? (मुख्य परीक्षा, 2014)

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/india-s-unique-job-crisis>

